

5-सतयुग की वापसी

अध्याय 1: लेने के देने क्यों पड़ रहे हैं?

1. प्रश्न: आधुनिक युग की प्रगति को अभूतपूर्व क्यों कहा गया है, और इसके साथ क्या समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं?
2. उत्तर: वर्तमान युग को अभूतपूर्व प्रगतिशील कहा जाता है क्योंकि इसमें जलयान, वायुयान, रेल, मोटर जैसे तेज़ वाहन, तार, रेडियो, दूरदर्शन जैसे संचार साधन और कल-कारखानों का विशाल उत्पादन जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। विज्ञान ने पौराणिक विश्वकर्मा को भी पीछे छोड़ दिया है, और ज्ञान के अनेक क्षेत्र विकसित हुए हैं। हालाँकि, इस प्रगति के साथ प्रदूषण, युद्धोन्माद, खाद्य-संकट, अपराध वृद्धि और नैतिक विकृतियाँ जैसी समस्याएँ भी बढ़ी हैं। विचारकों ने चेतावनी दी है कि यदि स्थिति ऐसी ही रही, तो यह महाप्रलय की ओर ले जा सकती है।
3. प्रश्न: 'सतयुग की वापसी' पुस्तक के अनुसार मानवी अन्तराल के खोखलेपन का क्या अर्थ है और इसका परिणाम क्या हुआ है?
4. उत्तर: पुस्तक बताती है कि इस सदी के अंत तक हुई प्रगति के बावजूद, संवेदना का स्रोत तेजी से सूखा है और मानवी अन्तराल खोखला हुआ है। इसका अर्थ है कि मनुष्य के भीतर करुणा, परोपकार और उच्च भावनाएँ कम हो गई हैं। इसके परिणामस्वरूप, समर्थता, कुशलता और सम्पन्नता के क्षेत्रों में अराजकता फैल गई है, जिससे व्यक्ति और समाज अनेक संकटों से जूझ रहे हैं। जब भाव-संवेदना जीवंत नहीं रहती, तो व्यक्ति सम्पदाओं और सुविधाओं का सदुपयोग नहीं कर पाता, जिससे 'लेने के देने' पड़ने लगते हैं।
5. प्रश्न: आदि कवि वाल्मीकि और भगवान राम के उदाहरण से भाव-संवेदना के महत्व को कैसे समझाया गया है?
6. उत्तर: क्रौंच पक्षी के आहत विलाप को देखकर वाल्मीकि की करुणा उभरी, और वे आदि कवि बन गए। इसी प्रकार, ऋषियों के अस्थि-पंजर देखकर राम की करुणा मर्माहत हुई, जिससे उन्होंने पृथ्वी को राक्षसों से मुक्त करने का प्रण लिया। ये उदाहरण दर्शाते हैं कि करुणा और भाव-संवेदना ही महान कार्यों को जन्म देती हैं और मनुष्य को उसके उच्चतम स्वरूप, यानी देवत्व, की ओर ले जाती हैं। यह दूसरों के दुख में द्रवित होकर सहायता करने की आंतरिक प्रेरणा है।
7. प्रश्न: 'देने की प्रकृति' वाले लोगों को देवता क्यों कहा गया है और ऐसे लोग कैसा वातावरण बनाते हैं?
8. उत्तर: जिनकी प्रकृति और नियति ही 'देना' है, उन्हें इस धरती पर देवता कहा जाता है। ऐसे लोग, जब दूसरों की जरूरतों को पूरा करते हैं, तो उन्हें आन्तरिक उत्कृष्टता और देवत्व का साक्षात्कार होता है। जहाँ ऐसी 'देने की प्रकृति' वाली आत्माएँ संगठित होती हैं, उस क्षेत्र को स्वर्ग कहा जाता है। ये सहृदय, सेवाभावी, और उदारचेता लोग न केवल स्वयं देवमानव होते हैं, बल्कि अपने कार्यक्षेत्र को भी स्वर्गोपम या सतयुग जैसा बना देते हैं।

अध्याय 2: विभीषिकाओं के पीछे झाँकती यथार्थता

5. प्रश्न: वैभव को असीमित मात्रा में कमाने के बावजूद मनुष्य उसे क्यों नहीं पचा पाता?
6. उत्तर: पुस्तक के अनुसार, वैभव को असीम मात्रा में कमाया जा सकता है, पर उसे एकाकी पचाया नहीं जा सकता। मनुष्य के पेट का विस्तार सीमित है, और निर्धारित मात्रा से अधिक भोजन दस्त, उलटी या

उदरशूल जैसे संकट पैदा करता है, भले ही वह कितना भी स्वादिष्ट क्यों न हो। यह नियम शारीरिक और मानसिक दोनों क्षेत्रों पर लागू होता है, जिनकी अपनी सीमाएँ हैं। वासना और तृष्णा की खाई इतनी गहरी है कि कुबेर की सम्पदा भी उसे नहीं पाट सकती, बल्कि थोड़ा उपभोग तो ललक को और भड़का देता है।

7. प्रश्न: वासना और तृष्णा को समुद्र से भी गहरा क्यों बताया गया है, और इसका मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है?
8. उत्तर: वासना और तृष्णा की खाई को इतना चौड़ा और गहरा बताया गया है कि कुबेर की सम्पदा और इंद्र की समर्थता भी उसे पाटने में कम पड़ती है। तृष्णा को समुद्र की चौड़ाई और गहराई से भी बढ़कर बताया गया है, जिसे भस्मासुर जैसे महादैत्य भी पूरा नहीं कर सके। इस अतृप्ति के कारण मनुष्य अपने आप को शरीर तक सीमित मान लेता है। मन के इस खेल में फँसा मनुष्य भटकते बंजारे की तरह अपनी चिंतन क्षमता गँवा देता है, अभावों का अनुभव करता है और उद्विग्नता, चिंता तथा आशंका से ग्रस्त रहता है।
9. प्रश्न: वर्तमान युग की स्थिति को "सामूहिक आत्महत्या" की ओर क्यों बढ़ता हुआ बताया गया है?
10. उत्तर: लेखक वर्तमान परिस्थितियों की समीक्षा करते हुए कहते हैं कि प्रदूषण, युद्धोन्माद, खाद्य संकट, और अपराधों में वृद्धि जैसी समस्याएँ सभी तटबंध तोड़ रही हैं। अस्वस्थता, दुर्बलता, कलह, छल-प्रपंच व्यवहार और चिंतन को विकृत कर रहे हैं। मूर्धन्य विचारक भविष्यवाणी कर रहे हैं कि यदि स्थिति यही रही, तो मनुष्य समुदाय सामूहिक आत्महत्या की ओर बढ़ रहा है। चूहों और खरगोशों की तरह जब साधन नहीं बचते, तो वे डूब मरने के लिए दौड़ते हैं; इसी तरह, मानव भी महाविनाश की ओर अग्रसर हो रहा है।
11. प्रश्न: 'अहंकारी यदुवंशी' और 'आग' के उदाहरण से लेखक क्या समझाना चाहते हैं?
12. उत्तर: लेखक 'अहंकारी यदुवंशियों' का उदाहरण देते हैं, जो बाहर से किसी आघात के बिना ही आपस में लड़-मरकर खप गए। यह दर्शाता है कि आंतरिक दोष ही विनाश का कारण बनते हैं। 'आग' सबसे पहले उसी स्थान को जलाती है जहाँ से वह प्रकट होती है' के माध्यम से लेखक यह बताना चाहते हैं कि उद्दीप्त वासना, अनियंत्रित तृष्णा और उन्माद जैसी अहंता का 'त्रिदोष' ही मानव गरिमा को निगल रहा है। ये आंतरिक विकृतियाँ ही आत्मविनाश का मार्ग प्रशस्त करती हैं, जिससे बचने की आशा कम ही रह जाती है।

अध्याय 3: महान् प्रयोजन के श्रेयाधिकारी बनें

9. प्रश्न: महान प्रयोजन के लिए काम करने वाले व्यक्ति को 'एकला चलो रे' की नीति क्यों अपनानी चाहिए?
10. उत्तर: ध्वंसात्मक कार्यों में लोग आसानी से साथ दे देते हैं, लेकिन रचनात्मक और अच्छे प्रयोजन के लिए अक्सर कोई सहायता नहीं करता। ऐसे में, कवि टैगोर ने कहा था कि यदि सत्प्रयोजन की दिशा में कुछ करना हो, तो 'एकला चलो रे' की नीति अपनानी चाहिए। गीताकार के अनुसार, जब सारा संसार मोह-निद्रा में सो रहा हो, तब भी योगी को प्रचलन के विपरीत जागते रहकर जन-सुरक्षा की हिम्मत जुटानी चाहिए। आरंभ में विरोध हो सकता है, लेकिन स्पष्ट लक्ष्य देखकर धीरे-धीरे साथी मिलते जाते हैं।

11. **प्रश्न:** हनुमान, अंगद जैसे रीछ-वानरों और भगीरथ के उदाहरण से लेखक क्या प्रेरणा देना चाहते हैं?
12. **उत्तर:** लेखक इन उदाहरणों से यह प्रेरणा देना चाहते हैं कि **निष्ठा भरे पुरुषार्थ में अद्भुत आकर्षण होता है** और महान कार्यों में दैवी और दृश्यमान सहायता अवश्य मिलती है। भगीरथ ने अकेले ही पहाड़ खोदकर नहर निकाली और गंगा को पृथ्वी पर बुलाया; इसी प्रकार, हनुमान, अंगद, नल-नील जैसे रीछ-वानरों ने मिलकर राम को जिताया। ये उदाहरण बताते हैं कि जब व्यक्ति लोकमंगल के लिए सच्चे मन से प्रयास करता है, तो अदृश्य सत्ता और अन्य लोग भी उसकी सहायता के लिए आगे आते हैं, जिससे नवसृजन का कार्य सफल होता है।
13. **प्रश्न:** वर्तमान युग में फैली व्यापक समस्याओं के बीच 'विचार परिष्कार' को क्यों आवश्यक बताया गया है?
14. **उत्तर:** लेखक बताते हैं कि वर्तमान में वासना, तृष्णा और अहंता का उन्माद महामारी की तरह जन-जन को भ्रमित और त्रस्त कर रहा है। अनीति ने नीति का स्थान ले लिया है, और विपन्नता पूरे समाज पर छाई हुई है। ऐसी स्थिति में, **मनुष्य समुदाय का 'विचार परिष्कार' (ब्रेन वाशिंग) बहुत आवश्यक है** ताकि गलत प्रचलनों की दिशाधारा बदली जा सके। यह विचारों और भावनाओं में गहराई तक बदलाव लाने की प्रक्रिया है, जो नए इंसान और नए संसार के निर्माण के लिए जरूरी है, भले ही यह असंभव प्रतीत हो।
15. **प्रश्न:** 'युग परिवर्तन' में परम सत्ता और मनुष्य की क्या भूमिका बताई गई है?
16. **उत्तर:** पुस्तक के अनुसार, युग परिवर्तन में **दृश्यमान भूमिका तो प्रामाणिक प्रतिभाओं की ही रहेगी, पर उसके पीछे अदृश्य सत्ता का असाधारण योगदान रहेगा।** परम सत्ता समस्त सृष्टि को उगाने, उभारने और बदलने को अपना विनोद मानती है, और विषम वेलाओं में अपनी विशेष भूमिका निभाने के लिए वचनबद्ध है। मनुष्य को अपने व्यक्तित्व को परम सत्ता से जुड़ सकने योग्य बनाना होगा, जिसे 'युगसाधना' कहा गया है। समर्थता, कुशलता और सम्पन्नता से ऊपर उठकर 'भाव-सम्वेदना' ही वह चौथी शक्ति है जो मनुष्य को देवदूत स्तर का बनाती है और युग परिवर्तन का आधार है।

अध्याय 4: सम्वेदना का सरोवर सूखने न दें

13. **प्रश्न:** मनुष्य को अपनी विशिष्टता को अनावश्यक संग्रह और उच्छृंखल उपभोग पर विसर्जित क्यों नहीं करना चाहिए?
14. **उत्तर:** लेखक कहते हैं कि **मनुष्य का दर्जा इसलिए नहीं है कि वह अपनी विशिष्टता को साधनों के संग्रह और उपभोग की आतुरता पर विसर्जित करता रहे।** कृमि-कीटक और पशु-पक्षी भी शरीरचर्या के लिए आवश्यक सामग्री प्राप्त करने के बाद प्रकृति के सुझाए कार्यों में लग जाते हैं, विश्व व्यवस्था में योगदान देते हैं, और अपव्यय नहीं करते। मनुष्य के लिए कुछ बड़े कर्तव्य निर्धारित हैं; उसे संयम साधना द्वारा आत्म-परिष्कार करके विश्व उद्यान का माली बनना है, ताकि सर्वत्र शोभा-सुषमा का वातावरण बन सके। अनावश्यक संग्रह और उच्छृंखल उपभोग उसे पग-पग पर अनर्थ करने के लिए मजबूर करता है।
15. **प्रश्न:** 'भाव-संवेदनाओं का स्रोत सूख जाने' से क्या तात्पर्य है और इसके क्या परिणाम होते हैं?
16. **उत्तर:** 'भाव-संवेदनाओं का स्रोत सूख जाने' का अर्थ है **चेतना क्षेत्र में करुणा, आत्मीयता और परोपकार की भावनाओं का समाप्त हो जाना, जैसे सूखा तालाब शुष्क हो जाता है।** इसके

परिणामस्वरूप, संकीर्ण स्वार्थपरता उत्पन्न होती है, जहाँ व्यक्ति को केवल अपना वैभव और उपभोग ही सब कुछ प्रतीत होता है। वह दूसरों की सेवा-सहायता में आत्मसंतोष या लोकसम्मान की संभावना भी नहीं देख पाता। यह स्थिति मनुष्य को मुरदे जैसा घिनौना बना देती है, जो दूसरों के हित-अनहित की बात तो दूर, अपना भला-बुरा भी नहीं समझ पाता।

17. प्रश्न: संवेदनहीन व्यक्तियों को 'नर-पिशाच' या 'ब्रह्म राक्षस' क्यों कहा गया है?

18. उत्तर: पुस्तक में कहा गया है कि करुणा के अभाव में मनुष्य का अंतराल चट्टान की तरह नीरस और निष्ठुर हो जाता है। ऐसे संवेदनहीन व्यक्ति दूसरों की स्थिति और आवश्यकता का भान नहीं कर पाते, और उनके लिए लकड़ी चीरना तथा किसी निरपराध को नोच लेना एक जैसा ही लगता है। वे अन्याय करने, सताने और शोषण करने में कुछ भी अनुचित नहीं मानते। यहाँ तक कि उन्हें नर-पशु भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि पशुओं की भी अपनी मर्यादाएँ होती हैं। इसलिए, **भाव-श्रद्धाविहीनों के लिए 'नर-पिशाच', 'ब्रह्म राक्षस' या 'दुर्दात दैत्य' जैसे नाम उपयुक्त हैं**, क्योंकि उनकी आपाधापी दूसरों के विकास-विनाश से कोई वास्ता नहीं रखती, केवल 'स्व' ही सब कुछ होता है।

19. प्रश्न: भाव-संवेदना को 'आत्मीयता' के रूप में विकसित करने से समाज को क्या लाभ होगा?

20. उत्तर: लेखक बताते हैं कि **सम्वेदना, आत्मीयता के रूप में विकसित होती है**, जब मनुष्य दूसरों के दुःख को अपना दुःख और दूसरों के सुख को अपना सुख मानने लगता है। सहानुभूति के रहते, ऐसे व्यवहार करना असंभव हो जाता है जिनसे किसी के अधिकारों का अपहरण हो या किसी को शोषण का शिकार बनना पड़े। जब यह आत्मभाव समस्त जनसमुदाय और अन्य प्राणियों तक विस्तृत हो जाता है, तो व्यक्ति ऐसे सोचते और करते हैं जिससे सुख-शांति का मार्ग प्रशस्त होता है। यदि भाव-संवेदना जीवंत और सक्रिय रहे, तो सृजन और सहयोग के आधार पर सर्वत्र उत्थान और कल्याण का सुयोग बन पड़ेगा।

अध्याय 5: समस्याओं की गहराई में उतरें

17. प्रश्न: समाज विज्ञानियों की 'अभावग्रस्तता' को समस्याओं का कारण मानने की मान्यता को लेखक क्यों गलत मानते हैं?

18. उत्तर: समाज विज्ञानी अभावग्रस्तता को समस्याओं का मूल कारण मानकर यह सोचते हैं कि अधिक साधन-सुविधाएँ प्रदान करने से सुख-शांति मिलेगी। लेखक इस मान्यता को गलत बताते हैं क्योंकि **मनुष्य की शारीरिक और मानसिक समर्थता इतनी अधिक है कि वह अपने और अनेकों का गुजारा कर सके**। कई सफल लोग बिना पैतृक सम्पदा या बाहरी सहायता के, केवल अपने मनोबल और पुरुषार्थ के आधार पर आगे बढ़े हैं। लेखक का तर्क है कि बाहरी अनुदानों पर निर्भर रहना व्यर्थ है, जैसे फूटे घड़े में पानी भरना; असली समाधान आंतरिक सुधार और उत्साह जगाने में है।

19. प्रश्न: 'अशिक्षा' और 'समर्थता' के वास्तविक कारणों और समाधानों पर लेखक क्या कहते हैं?

20. उत्तर: लेखक के अनुसार, **अशिक्षा का कारण पुस्तकों या अध्यापकों की कमी नहीं, बल्कि शिक्षा का महत्व न समझना और उसके प्रति उत्साह का अभाव है**। पिछड़े क्षेत्रों में स्कूल खाली रहते हैं क्योंकि छात्रों में उत्साह नहीं होता। इसी प्रकार, समर्थता व्यायामशालाओं या टॉनिक की दुकानों में नहीं मिलती, बल्कि संयम, साधना और सुनियोजित दिनचर्या अपनाने से आती है। दूसरों का रक्त चढ़ाने से उपलब्धि क्षणिक होती है; असली काम तो अपने निजी रक्त उत्पादन के सुव्यवस्थित होने पर ही चलता है। अर्थात्, आंतरिक प्रेरणा और आत्म-निर्भरता ही वास्तविक समाधान है।

21. **प्रश्न:** लेखक 'सम्पदा' के आधार पर प्रगति के भ्रम को कैसे तोड़ते हैं?
22. **उत्तर:** लेखक इस भ्रम को तोड़ते हैं कि सम्पदा के आधार पर ही प्रगति हो सकती है। लोग धनियों को ठाठ-बाट से देखकर उन्हें सुखी और समुन्नत मान लेते हैं। पर लेखक बताते हैं कि जब उनके बाहरी आवरण को हटाया जाता है, तो पता चलता है कि वे चिंताओं, ईर्ष्या, आशंकाओं और अपने दुर्गुणों-दुर्व्यसनों से बुरी तरह ग्रस्त होते हैं। वे औसत नागरिक की तुलना में अधिक उद्विग्न, रुग्ण और चिंतित रहते हैं, और जीवन के आनंद से वंचित होते हैं। यह दर्शाता है कि धन केवल ऊपरी चमक है, वास्तविक सुख और प्रगति आंतरिक संतुष्टि से आती है।
23. **प्रश्न:** लेखक 'बुद्धि भ्रम' और 'दुर्भावनाओं' को वर्तमान समस्याओं का मूल कारण क्यों मानते हैं?
24. **उत्तर:** लेखक बताते हैं कि तथाकथित प्रगति और साधन-सम्पन्नता के बावजूद भयानक अवगति का वातावरण इसलिए बना है क्योंकि 'बुद्धि भ्रम' ने ही ये अनर्थ सँजोए हैं। बुद्धि का निर्धारण भाव-संवेदनाओं के आधार पर होता है; यदि भावनाओं में नीरसता और निष्ठुरता घुल जाए, तो बुद्धि भी विकृत हो जाती है। यह विकृतियों का जमावड़ा ही एकमात्र कारण है, जिसके रहते समृद्धि और चतुरता के विकास के बावजूद सर्वतोमुखी विपन्नता ही हाथ लगती है। इसलिए, लेखक 'तलहटी' (जड़ में बैठी दुर्भावनाओं) को सुधारने की आवश्यकता पर बल देते हैं।

अध्याय 6: समग्र समाधान — मनुष्य में देवत्व के अवतरण से

21. **प्रश्न:** 'सद्बुद्धि' और 'भाव-संवेदना' का महत्त्व पदार्थ-सम्पदा, बल और शिक्षा के सदुपयोग में कैसे निहित है?
22. **उत्तर:** लेखक कहते हैं कि पदार्थ-सम्पदा, बल और शिक्षा की उपयोगिता तभी होती है जब उनका सदुपयोग किया जाए, अन्यथा अमृत भी विष बन सकता है। इनके सत्परिणाम तभी देखे जा सकते हैं, जब सदुपयोग कर सकने वाली 'सद्बुद्धि' सक्रिय हो। सद्बुद्धि का आधार केवल नीतिनिष्ठा या समाजनिष्ठा नहीं है, बल्कि भाव-संवेदनाओं का पावन प्रवाह उसमें भले-बुरे ज्वार-भाटे लाता रहता है। अर्थात्, सच्ची सद्बुद्धि और सही उपयोग के लिए गहराई में भाव-संवेदनाओं का होना अत्यंत आवश्यक है।
23. **प्रश्न:** अच्छे-खासे मस्तिष्क वाले व्यक्ति आदर्शवाद क्यों नहीं अपनाते और उन्हें अनर्थ क्यों सूझता रहता है?
24. **उत्तर:** लेखक का प्रश्न है कि जब अधिकांश लोगों के मस्तिष्क सही होते हैं, तो वे आदर्शवादी उत्कृष्टता क्यों नहीं अपनाते और उन्हें अनर्थ ही क्यों सूझता रहता है। इसका कारण यह है कि अंतःकरण में श्रद्धा और संवेदना की शीतलता और सरसता भरी रहने पर ही सदाशयता का वातावरण बनता है। मानसिकता उस दासी की तरह है जो अंतःश्रद्धा रूपी रानी की सेवा में खड़ी रहती है। यदि अंतःकरण में श्रद्धा और संवेदना का अभाव हो, तो मस्तिष्क को सही दिशा नहीं मिलती, जिससे व्यक्ति अनर्थकारी योजनाएँ बनाता है और संकटों का सृजन करता है।
25. **प्रश्न:** 'देवमानव' कौन कहलाते हैं और उनके पुरुषार्थ से समाज में क्या परिवर्तन आता है?
26. **उत्तर:** जो अपनी सुविधाओं और मनचली इच्छाओं पर अंकुश लगाकर बचत को लोकमंगल और आत्मपरिष्कार के लिए समर्पित करते हैं, वे 'देवमानव' कहलाते हैं। वे अपनी क्षमता का कण-कण परमेश्वर के चरणों पर अर्पित करते हैं, जिससे उन्हें दैवी अनुग्रह और उच्चस्तरीय व्यक्तित्व प्राप्त होता है। महानता इसी स्थिति को कहते हैं। उन्हीं के प्रबल पुरुषार्थों के आधार पर शालीनता का वातावरण

बनता है और समस्त संसार सुन्दर व समुन्नत बन पड़ता है। वे दूसरों की सुविधा में अपनी प्रसन्नता देखते हैं और अपने क्रियाकलापों को लोक-कल्याण में लगाते हैं।

27. प्रश्न: 'कुटिलता' या 'नास्तिकता' किसे कहा गया है और इसकी क्या देन है?
28. उत्तर: पुस्तक में संकीर्ण स्वार्थपरता और स्वच्छंद उपयोग की ललक को 'कुटिलता' या 'नास्तिकता' कहा गया है। यह भौतिकवादी दृष्टि जनमानस पर छाई हुई है, जो केवल अपना और दूसरों का सब कुछ हड़प जाने या बिखेर देने को ही लक्ष्य मानती है। इसी प्रेरणा से वह निष्ठुरता पनपती है, जो हर कीमत पर हड़पने की शिक्षा देती है, चाहे इसके लिए किसी भी स्तर का अनाचार क्यों न बरतना पड़े। यह मानसिकता अनावश्यक संचय और अवांछनीय उपभोग के लिए उकसाती है, और जहाँ भी इसकी छाप पड़ती है, वहीं अनेक संकट और विग्रह उत्पन्न होते हैं। इसे शालीनता को समाप्त करने वाली ओले की वर्षा के समान बताया गया है।
29. प्रश्न: 'मनुष्य में देवत्व का उदय' और 'धरती पर स्वर्ग का अवतरण' से क्या अभिप्राय है?
30. उत्तर: लेखक के अनुसार, जब अन्तःकरण में 'श्रद्धा' और 'दिव्य चेतना' का संयोग होता है, तो उसे 'दिव्य सम्वेदना' कहते हैं, जो नए उल्लास के साथ उभरती है। इसका अनुभव करने पर मनुष्य देवोपम स्थिति में पहुँच जाता है। उसे हर किसी में अपना आपा दीखता है, और दूसरों की सुविधा ही अपनी प्रसन्नता बन जाती है। ऐसा व्यक्ति अपने चिन्तन और क्रियाकलापों को लोक-कल्याण में लगाता है। व्यक्ति के ऊपर भगवत् सत्ता उतरने को 'मनुष्य में देवत्व का उदय' कहा गया है। यदि यह अवतरण व्यापक हो जाए, तो धरती पर स्वर्ग के अवतरण जैसी परिस्थितियाँ सर्वत्र बिखरी दिखाई देंगी।

अध्याय 7: बस एक ही विकल्प — भाव-सम्वेदना

26. प्रश्न: वर्तमान समस्याओं के निराकरण हेतु सम्पदा, सत्ता और प्रतिभा पर निर्भरता क्यों पर्याप्त नहीं है?
27. उत्तर: लेखक कहते हैं कि वर्तमान कठिनाइयों के निराकरण के लिए आमतौर पर सम्पदा, सत्ता और प्रतिभा पर ही आशा की जाती है। हालाँकि, पिछले दिनों इनके द्वारा जो कुछ हुआ है, उसका लेखा-जोखा लेने पर निराशा ही हाथ लगती है। लेखक का तर्क है कि जब भी ये तीनों अतिरिक्त मात्रा में संचित होते हैं, एक प्रकार का उन्माद उत्पन्न कर देते हैं, जिससे लोग सुविधा संवर्धन के नाम पर मनमानी और उद्धत आचरण करते हैं। सम्पन्न लोग ही प्रदूषण फैलाने वाले कारखाने लगाते हैं, बेरोजगारी बढ़ाते हैं, और आतंक फैलाते हैं। प्रतिभा के धनी वैज्ञानिकों ने ही मृत्यु किरणों जैसे आविष्कार किए हैं। इसलिए, ये बाहरी साधन समस्याओं का समाधान नहीं, बल्कि कई बार उनके जनक ही बन जाते हैं।
28. प्रश्न: 'मनःस्थिति ही परिस्थितियों की जन्मदात्री है' - इस कथन का क्या अर्थ है और इसका समाधान क्या है?
29. उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि हमारी आंतरिक मानसिक स्थिति ही बाहरी परिस्थितियों को जन्म देती है। लेखक जोर देते हैं कि यदि हमें वास्तव में परिस्थितियों की विपन्नता को सुधारना है, तो हमें जनसमुदाय की मनःस्थिति में दूरदर्शी विवेकशीलता को उगाना, उभारना और गहराई तक समाविष्ट करना होगा। मन और बुद्धि भी स्वतंत्र नहीं हैं; वे भावनाओं, आकांक्षाओं और मान्यताओं के आधार पर अपनी दिशा तय करते हैं। अंतःकरण में भाव-संवेदना का आदर्शवादी उत्कृष्ट स्वरूप ही वह सूत्र है, जिसके परिष्कृत होने पर व्यक्ति ऋषिकल्प, देवमानव बन सकता है और संसार का कायाकल्प कर सकता है।

30. प्रश्न: 21 वीं सदी को 'भाव-संवेदनाओं के उभरने-उभारने की अवधि' क्यों कहा गया है और इसका क्या परिणाम होगा?
31. उत्तर: लेखक का मानना है कि 21 वीं सदी का उज्ज्वल भविष्य केवल एक ही आधार पर सुनिश्चित है: जन-जन की भाव-संवेदनाओं को उत्कृष्ट, आदर्श और उदात्त बनाया जाए। अनावश्यक सम्पन्नता की ललक ही अनाचारों को जन्म देती है, इसलिए लिप्साओं में कटौती करके आत्मविश्वास और पुरुषार्थ जगाना होगा। लेखक हमें इस उपेक्षित क्षेत्र (भाव-संवेदना) को हरा-भरा बनाने में निष्ठावान माली की भूमिका निभाने का अनुरोध करते हैं। उनका मानना है कि इसी आधार पर यह विश्व उद्यान हरा-भरा, फला-फूला और सुषमा-सम्पन्न बन सकेगा, और स्वर्गलोक के नंदन वन की समता कर पाएगा।
-

अध्याय 8: दानव का नहीं देव का वरण करें

29. प्रश्न: मनुष्य को अपने भाग्य का निर्माता और भविष्य का अधिष्ठाता क्यों कहा गया है?
30. उत्तर: लेखक बताते हैं कि इस संसार में सृजन और विनाश, उत्थान और पतन की शक्तियाँ (जिन्हें देव और दानव कहते हैं) निरंतर काम करती रहती हैं। मनुष्य को यह छूट है कि वह अपनी समझदारी के आधार पर इनमें से किसी का भी वरण करे और उसके अनुरूप उत्पन्न होने वाली सुख-शांति या पतन-पराभव की प्रतिक्रिया सहे। अपनी इच्छा-आकांक्षा पर निर्भर करता है कि वह अपने या अपने समुदाय के लिए विपन्नता या सुसम्पन्नता अर्जित करे। इसी विभूति के कारण मनुष्य को अपने भाग्य का निर्माता एवं भविष्य का अधिष्ठाता कहा जाता है।
31. प्रश्न: विज्ञान, साहित्य, युद्धोन्माद, नशे और महिलाओं के उत्पीड़न के पीछे किस 'भावना क्षेत्र की विकृति' को उत्तरदायी बताया गया है?
32. उत्तर: लेखक इन सभी समस्याओं के पीछे 'भावना क्षेत्र की विकृति' को मूल कारण बताते हैं। विज्ञान ने प्रदूषण उगलने वाले कारखाने बनाए क्योंकि अधिक कमाने की ललक प्रधान थी। साहित्य और फिल्मों में अवांछनीयता का समावेश निजी लाभ के अति-उत्साह के कारण हुआ। युद्धोन्माद और नशों का व्यापार व्यक्तिगत लाभ के लालच से पनपा, बिना यह सोचे कि यह असंख्य लोगों का विनाश करेगा। नारी पर असाधारण भार लादना भी संवेदना के अभाव और स्वेच्छाचार का परिणाम है। इन सभी में दूसरों की पीड़ा को दरगुजर करके अपने 'स्वार्थ' को सर्वोपरि रखने की निष्ठुर चेतना काम करती है।
33. प्रश्न: 'संवेदनाओं में करुणा का समावेश' होने पर व्यक्ति और समाज में क्या परिवर्तन आता है?
34. उत्तर: लेखक कहते हैं कि संवेदनाओं में करुणा का समावेश होने पर दूसरे भी अपने जैसे दीखने लगते हैं। जब यह आत्मभाव समूचे समाज तक विस्तृत हो जाता है, तो किसी को भी हानि पहुँचाने या सताने की बात सोचते ही हाथ-पैर काँपने लगेंगे। कोई व्यक्ति अपनी चेतना को दैत्य स्तर का निष्ठुर नहीं बनाना चाहेगा, यदि उसके भीतर हृदय नाम की कोई चीज है। ऐसे व्यक्ति की क्रिया और विचारणा मशीन नहीं बनती, बल्कि वे आत्मीयता, करुणा-सहकारिता और सेवा-साधना के लिए निरन्तर आकुल-व्याकुल रहते हैं। इससे समाज में सुख-शांति और सहयोग का वातावरण बनता है, और वर्तमान की उलझनें समाप्त हो जाती हैं।
-